University in News on 21 March 2025

NBT PAGE 4

राज्यपाल और कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल ने कहा...

'स्टूडेंट्स को डिजिटल रूप में बेहतर कंटेंट मिलना जरूरी'

एलयू के मालवीय सभागार में एजुकेशनल फिल्म फेस्टिवल शुरू।

लखनऊ यूनिवर्सिटी में 26वें सीईसी-शैक्षिक फिल्म महोत्सव का राज्यपाल ने किया उद्घाटन, बोलीं- 'शिक्षा का स्तर बढ़ाने में मददगार हो सकती हैं फिल्में'

■ NBT न्यूज, लखनऊ

विडियो कंटेंट की बढ़ती लोकप्रियता के दौर में स्टूडेंट्स को गुणवत्तापूर्ण कंटेंट देना बड़ी चुनौती है। इस दौर में फिल्में, शिक्षा के स्तर को बढ़ाने का एक अच्छा माध्यम हो सकती हैं। हमें ऐसा माहौल बनाने की जरूरत है, जिससे स्टूडेंट्स को डिजिटल रूप में बेहतर कंटेंट उपलब्ध हो। ये बातें गुरुवार को राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने एलयू के मालवीय सभागार में शुरू हुए तीन दिवसीय 26वें UGC-CEC एजुकेशनल फिल्म फेस्टिवल के उद्घाटन के दौरान कहीं। वह कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुईं।

उन्होंने सरकार की ओर से एआई आधारित शिक्षा और रिसर्च के लिए 500 करोड़ रुपये बजट, एएलएम की स्थापना और ज्ञान भारतम मिशन के जरिए पांडुलिपि विरासत के सर्वेक्षण, दस्तावेजीकरण के बारे में जानकारी दी। साथ ही मातृभाषा, साफ-सफाई, और डिजिटल युग पर विशेष चर्चा की। उन्होंने 5वीं कक्षा तक के बच्चों को मातृ भाषा में पढ़ाई करवाने पर जोर दिया।

फिल्म, डॉक्युमेंट्री के जरिए दिखाई गई साहित्यिक विरासत

महोत्सव ने पर्यावरणीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया, जिसमें जलकुंभी (Water Hyacinth) पर एक डॉक्यूमेंट्री प्रस्तुत की गई। फिल्म के जरिए जलकुंभी के नुकसानों और संकट से निपटने के लिए ठोस कदम उठाए और पर्यावरण पुनर्स्थापन को दर्शाया। सांस्कृतिक विरासत से जुड़ी फिल्म अ तबल पॉप्स अप आफ्टर 100 इयर्स प्रदर्शित की गई। यह फिल्म बांग्ला की प्रसिद्ध हास्य कविता पुस्तक अबल तबल की पहली पॉप-अप संस्करण की रचना पर केंद्रित थी। कहानी छोटी बच्ची मायरा और उसके दादा के इर्द-गिर्द घूमती है, जो इस अनूठी पुस्तक को तैयार करते हैं। फिल्म ने सुकुमार रे की साहित्यिक विरासत को खूबसूरती से दर्शाया, जिससे दर्शक 1920 के दशक के कलकत्ता की दुनिया में डूब गए। इनेप्पु (द कनेक्शन) फिल्म ने ग्रामीण जीवन की कठिनाइयों को एक संवेदनशील दृष्टिकोण से पेश किया। पर्यावरण से जुड़े एक डॉक्यूमेंट्री प्लास्टिक प्रदूषण के खतरे पर केंद्रित थी।

टीचिंग में नई तकनीक अपनाने पर जोर

प्रो. नड्डा ने टीचिंग में नई तकनीक जैसे सेल्फ-पेस लर्निंग और फ्लिप क्लासरूम को अपनाने पर जोर दिया। वहीं प्रफेसर आलोक कुमार राय ने कहा कि एलयू लगातार डिजिटल लर्निंग पर फोकस कर रहा है।

18 पुरस्कृत फिल्में दिखाई जाएंगी

यह कार्यक्रम से 22 मार्च तक चलेगा। इसमें कुल 18 पुरस्कृत फिल्में दिखाई जाएंगी, जो शिक्षा, विकास, मानवाधिकार, पर्यावरण और स्वच्छ भारत जैसे विषयों पर केंद्रित होंगी। दिन की पहली फिल्म कोलकाता के प्रसिद्ध वेंट्रिलोक्विस्ट प्रबीर कुमार दास के जीवन पर आधारित एक जीवनीपरक डॉक्यूमेंट्री थी। लघु फिल्म ने दास और उनके प्रिय कठपुतली साथी माइकल के भावनात्मक और पेशेवर सफर को खूबसूरती से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में राज्यपाल उत्तर प्रदेश आनंदीबेन पटेल, लखनऊ यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रफेसर आलोक कुमार राय, डायरेक्टर सीईसी प्रफेसर जेबी नड्डा और ज्वाइंट डायरेक्टर, साफ्टवेयर सीईसी डॉ. सुनील मेहरू मौजूद रहे।

AMAR UJALA MY CITY PAGE 7

लघु फिल्मों ने दिखाई विलुप्त होती कलाओं के संरक्षण की राह

संवाद न्यूज एजेंसी

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में बृहस्पतिवार को तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव का आगाज हुआ। पहले दिन फिल्मों से विलुप्त होती कलाओं के संरक्षण, शिक्षा के विकास, मानवाधिकार, पर्यावरण जैसे विषयों को गहनता से समझा।

शैक्षिक संचार संघ (सीईसी) व विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 26वें फिल्म महोत्सव में कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने कहा कि दृश्य, छायाचित्र कहानियों से फिल्मांकन अधिक प्रभावित करता है।

सीईसी के निदेशक जगत भूषण नड्डा ने कहा कि शैक्षिक फिल्में देश के विकास में अहम योगदान दे सकती हैं। डीन एकेडमिक मीडिया और शैक्षिक फिल्मों के बढ़ते दायरे पर चर्चा करते हुए कहा कि भारत में तेजी से इसका प्रसार हो रहा है। इसलिए फिल्में शिक्षा के स्तर को गढ़ने का एक अच्छा माध्यम हो सकती हैं।

कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने इस अवसर पर कहा कि संवाद में कंटेंट का महत्व सात फीसदी है। दृश्य, छायाचित्र कहानियों के माध्यम से फिल्मांकन लोगों को अधिक प्रभावित करता है। सीईसी के निदेशक प्रो. जगत भूषण नड्डा ने कहा कि शैक्षिक फिल्में देश के विकास में अहम योगदान दे सकती हैं। इसलिए यूजीसी और सीईसी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत मूक कोर्सेज के जरिए शिक्षण को बेहतर करने का काम कर रहा है।

लखनऊ विश्वविद्यालय में सीईसी और यूजीसी के तीन दिवसीय फिल्म महोत्सव का आगाज

प्रो. गीतांजलि मिश्रा ने बताया कि महोत्सव में 18 फिल्में दिखाई जाएंगी। सीईसी के संयुक्त निदेशक सॉफ्टवेयर डॉ. सुनील मेहरू, प्रतिकुलपति प्रो. मनुका खन्ना मौजूद रहे।

पहले दिन ये फिल्में दिखाई गईं : सबसे पहले कोलकाता के वेंट्रिलोक्विस्ट (पेट से बोलने वाले) प्रबीर कुमार दास के जीवन पर आधारित डॉक्यूमेंट्री मी एंड माइकल दिखाई गई। इसके बाद पर्यावरणीय मुद्दे पर आधारित डॉक्यूमेंट्री वाटर हायसिंथ (जलकुंभी) का प्रदर्शन हुआ। सुंदर होने के बावजूद यह तेजी से जल निकायों पर फैलकर पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुंचाती है।

तीसरी सांस्कृतिक विरासत से जुड़ी फिल्म 'अबल तबल' में छोटी बच्ची मायरा और उसके दादा के इर्द-गिर्द घूमती कहनी दिखाई गई, जो अनूठी पुस्तक तैयार करते हैं। इनैप्पु (द कनेक्शन) फिल्म ने ग्रामीण जीवन की कठिनाइयों को संवेदनशील दृष्टिकोण से पेश किया।

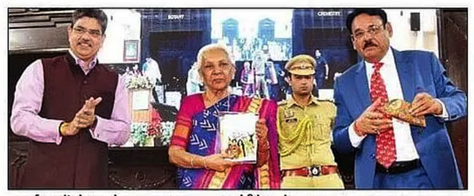

कार्यक्रम में प्रो. आलोक कुमार, राज्यपाल आनंदीबेन पटेल व जगत भूषण नड्डा। -अमर उजाला

फिल्में शिक्षा का स्तर बेहतर करने का सशक्त माध्यमः राज्यपाल

फिल्म महोत्सव का उद्घाटन कुलाधिपति राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने किया। उन्होंने कहा, फिल्में शिक्षा के स्तर को बेहतर करने का सबसे सशक्त माध्यम हैं। डिजिटल मीडिया और शैक्षिक फिल्मों के बढ़ते दायरे पर चर्चा करते हुए कहा कि भारत में तेजी से इनका प्रसार हो रहा है।

लविवि में स्थापित होगा ईएमआरसी केंद्र

लखनऊ। आने वाले दिनों में लविवि में शैक्षणिक मल्टीमीडिया अनुसंधान केंद्र (ईएमआरसी) की स्थापना होगी। इससे न सिर्फ पत्रकारिता के विद्यार्थियों को लाभ होगा, बल्कि मूक और स्वयं के ऑनलाइन कोर्स को भी गति मिलेगी। कुलपति ने राज्यपाल के सामने सीईसी के निदेशक को इसका प्रस्ताव दिया तो उन्होंने सहर्ष स्वीकृति दी। लविवि इस पर विस्तृत रूपरेखा तैयार कर शैक्षिक संचार संघ को देगा। अभी तक शहर में बीबीएयू में ईएमआरसी केंद्र है, जो यूपी का इकलौता सेंटर है। (संवाद)

लविविः 29 कोर्सों के परिणाम घोषित

लखनऊ। लविवि ने पिम सेमेस्टर परीक्षा के 29 कोर्सों के परीक्षा जारी किए। परीक्षा नियंत्रक विद्यानंद त्रिपाठी ने बताया कि पहले, तीसरे और पांचवें सेमेस्टर की परीक्षा के रिजल्ट आए हैं। (संवाद)

HINDUSTAN PAGE 7

आयोजन | लखनऊ विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव का आगाज हुआ, पहले दिन आधा दर्जन फिल्मों की हुई स्क्रीनिंग

भारत में शिक्षा को बेहतर करने में फिल्में सशक्त माध्यमः राज्यपाल

लखनऊ, संवाददाता। एलयू में शैक्षिक संचार संघ (सीईसी) और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) की ओर से आयोजित अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव का आगाज गुरुवार को हुआ। ऐतिहासिक मालवीय सभागार में मुख्य अतिथि कुलाधिपति, राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने तीन दिवसीय फेस्ट का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि फिल्में भारत में शिक्षा के स्तर को बेहतर करने का सबसे सशक्त माध्यम हैं। उन्होंने डिजिटल मीडिया और शैक्षिक फिल्मों के बढ़ते दायरे पर चर्चा करते हुए कहा कि भारत में तेजी से इसका प्रसार हो रहा है। इसलिए फिल्में शिक्षा के स्तर को गढ़ने का एक अच्छा माध्यम हो सकती हैं।

कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने इस अवसर पर कहा कि संवाद में कंटेंट का महत्व सात फीसदी है। दृश्य, छायाचित्र कहानियों के माध्यम से फिल्मांकन लोगों को अधिक प्रभावित करता है। सीईसी के निदेशक प्रो. जगत भूषण नड्डा ने कहा कि शैक्षिक फिल्में देश के विकास में अहम योगदान दे सकती हैं। इसलिए यूजीसी और सीईसी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत मूक कोर्सेज के जरिए शिक्षण को बेहतर करने का काम कर रहा है।

18 फिल्में विभिन्न विषयों पर दिखाई जाएंगी

■ डिजिटल मीडिया और फिल्मों के दायरे पर चर्चा का आयोजन हुआ

एलयू में गुरुवार से फिल्म महोत्सव का शुभारंभ हुआ। इस मौके पर राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय समेत अन्य मौजूद रहे।

दास और माइकल के सफर ने मोहा मन

फिल्म महोत्सव में पहले दिन कई लघु फिल्मों और डाक्यूमेंट्री का प्रदर्शन हुआ। पहली फिल्म कोलकाता के प्रख्यात वेंट्रिलोक्विस्ट (पेट से बोलने वाले) प्रबीर कुमार दास के जीवन पर आधारित डॉक्यूमेंट्री मी एंड माइकल थी। इस लघु फिल्म ने दास और कठपुतली साथी माइकल के भावनात्मक और पेशेवर सफर को खूबसूरती से प्रस्तुत किया।

i-NEXT PAGE 4

लखनऊ विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय फिल्म फेस्टिवल का शुभारंभ

शिक्षा और विकास के लिए फिल्में बेहतर माध्यमः गवर्नर

5वीं क्लास तक बच्चों को अपनी मातृभाषा में ही पढ़ाई करनी चाहिए

LUCKNOW (20 MARCH): फिल्में अभिव्यक्ति के सबसे बेहतरीन माध्यमों में से एक हैं. जिनके माध्यम से हम एक पीढ़ी को ही नहीं बल्कि आने वाली तमाम पीढ़ियों को एक बेहतर संदेश दे सकते हैं, बशर्ते संदेश लोगों के हितों से जुड़ा हुआ और जागरूक करने वाला हो. इसी तरह से शिक्षा में फिल्मों की उपयोगिता को बताने और यंगस्टर्स के अंदर के फिल्म मेकर को दुनिया के सामने लाने के लिए लखनऊ यूनिवर्सिटी में तीन दिवसीय यूजीसी-सीईसी एजुकेशनल फिल्म फेस्टिवल का आयोजन किया गया. कार्यक्रम का शुभारंभ उत्तर प्रदेश की राज्यपाल एवं यूनिवर्सिटी की कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल ने किया. जहां पर यूनिवर्सिटी के वीसी प्रो. आलोक कुमार राय, डायरेक्टर सीईसी प्रो. जेबी नड्डा तथा ज्वाइंट डायरेक्टर सॉफ्टवेयर डॉ. सुनील मेहरू उपस्थित रहे.

डिजिटल मीडिया का विकास

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि माननीय राज्यपाल ने अपने संबोधन में डिजिटल मीडिया और एजुकेशनल फिल्मों के बढ़ते दायरे पर चर्चा की. उन्होने बताया कि किस तरह भारत में तेजी के साथ डिजिटल मीडिया का विकास हो रहा है. जिसमें शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिए फिल्में किस तरह से एक बेहतरीन माध्यम साबित हो सकती हैं. इसके साथ ही राज्यपाल ने मातृभाषा के महत्व पर चर्चा करते हुए कहा कि 5वीं क्लास तक बच्चों को अपनी मातृभाषा में ही पढ़ाई करनी चाहिए, जिससे वो अपनी संस्कृति को पहचान सकें और भविष्य में देश के विकास के लिए बेहतर निर्णय ले सकें.

PICS: DAINIK JAGRAN-I NEXT

सेल्फ पेस लर्निंग एक बेहतरीन टेक्निक

डायरेक्टर सीईसी प्रो. जेबी नड्डा ने टीचिंग में नई टेक्निक्स पर जोर देते हुए सेल्फ पेस लर्निंग और फ्लिप क्लासरूम को अपनाने पर जोर दिया. इसके साथ ही उन्होंने कहा कि शैक्षिक फिल्मों का उपयोग देश के विकास के लिए किया जा सकता है क्योंकि एक फिल्म देश के कोने-कोने तक पहुंचती है और लोगों को शिक्षित एवं जागरूक करती है.

फिल्मों की हुई स्क्रीनिंग

फिल्म फेस्टिवल के पहले दिन कुछ अवॉर्ड विनिंग फिल्म्स और डॉक्यूमेंट्रीज की स्क्रीनिंग भी की गई. जिसमें सबसे पहले वेंट्रिलोक्विस्ट प्रबीर कुमार दास के जीवन पर आधारित एक डॉक्यूमेंट्री की स्क्रीनिंग की गई. इसमें प्रबीर कुमार और उनकी कठपुतली माइकल के बीच के 50 साल के गहरे संबंधों को दर्शाया गया. इसके साथ ही बंगाल का आतंक कही जाने वाली जलकुंभी को लेकर भी एक फिल्म की स्क्रीनिंग हुई. जिसमें दिखाया गया कि किस तरह से एक अकेले इंसान ने इस डर से निपटने के लिए कदम उठाया और आपदा को अवसर में बदलते हुए इस जलकुंभी को रोजगार का माध्यम बनाते हुए इसके पत्तों से साड़ी, कागज जैसी चीजें बनाने लगे. इसके साथ ही कार्यक्रम में इनैप्पु, प्लास्टिक पॉल्यूशन और नैतिक चिकित्सा अभ्यास को लेकर बनाई गई फिल्मों को भी दिखाया गया.

❝ मुझे खुशी है कि 104 साल पुराने समृद्ध विरासत वाले विश्वविद्यालय में इतने भव्य कार्यक्रम का आयोजन करने का सौभाग्य लखनऊ यूनिवर्सिटी को मिला. हम विश्वविद्यालय को हर तरह से बेहतर बनाने के लिए लगातार प्रयासरत हैं और डिजिटल लर्निंग पर लगातार फोकस कर रहे हैं.

प्रो. आलोक कुमार राय, वीसी, एलयू

नए कोर्स की संबद्धता के लिए आवेदन 22 तक

LUCKNOW (20 MARCH): लखनऊ विश्वविद्यालय ने एनओसी पा चुके नए महाविद्यालयों और पूर्व संचालित महाविद्यालयों में नए कोर्सों (बीएड को छोड़ कर) की संबद्धता के आवेदन के लिए गुरुवार को संशोधित समय सारणी जारी कर दी है. यह प्रक्रिया शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए होगी.

ऑनलाइन आवेदन

कुलसचिव विद्यानंद त्रिपाठी ने निर्देश जारी कर कहा है कि सभी प्रस्तावित महाविद्यालय और पहले से संचालित महाविद्यालय henoc.upsdc.gov.in पोर्टल पर आनलाइन आवेदन कर सकते हैं.

निरीक्षण रिपोर्ट 30 मार्च तक

तय तिथि के अनुसार, निरीक्षण मंडल के गठन के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 22 मार्च और निरीक्षण रिपोर्ट प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 30 मार्च निर्धारित है. विश्वविद्यालय द्वारा संबद्धता प्रदान करने की अंतिम तिथि 10 अप्रैल और शासन में अपील करने की अंतिम तिथि 20 अप्रैल है. शासन स्तर पर अपील निस्तारित करने के लिए अंतिम तिथि 10 मई है। संबद्धता प्रक्रिया की अंतिम तिथि 31 मई है।

तो एडमिशन प्रतिबंधित होंगे

लखनऊ विश्वविद्यालय ने अपने संबद्ध महाविद्यालयों को निर्देशित किया है कि ऐसे कोर्स, जिनकी संबद्धता आगामी 30 जून को समाप्त हो रही है, वे भी पोर्टल पर आवेदन करें. अन्यथा आगामी सत्र में संबंधित पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्रतिबंधित रहेगा, जिसकी जिम्मेदारी महाविद्यालय की होगी.

PIONEER PAGE 3

भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए डिजिटल तकनीक अपनाना जरूरी

● राज्यपाल ने सीईसी-यूजीसी शैक्षिक फिल्म महोत्सव का किया उद्घाटन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने गुरुवार को शैक्षिक संचार संकाय (सीईसी), नई दिल्ली के तत्वाधान में लखनऊ विश्वविद्यालय में आयोजित तीन दिवसीय 26वें सीईसी-यूजीसी शैक्षिक फिल्म महोत्सव का उद्घाटन किया। राज्यपाल ने शैक्षणिक फिल्म फेस्टिवल में अपने संबोधन में शैक्षणिक फिल्म को केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि ज्ञान, जागरूकता और सामाजिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम बताया। उन्होंने फिल्म फेस्टिवल के मंच की सराहना करते हुए कहा कि इसके माध्यम से समाज के महत्वपूर्ण मुद्दों को उजागर किया जाता है, जो युवाओं के बीच नए दृष्टिकोण को जन्म देते हैं। राज्यपाल ने डिजिटल तकनीक और शैक्षिक वीडियो के महत्व पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि वर्तमान युग में इंटरनेट विद्यार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन बन चुका है, जिससे उनकी शिक्षा अधिक इंटरएक्टिव, सुलभ और प्रभावी बन रही है। इसके साथ ही उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सही मार्गदर्शन और तकनीकी उपकरणों के उपयोग से विद्यार्थियों की समझ और ज्ञान गहरी होती है। राज्यपाल ने प्रधानमंत्री द्वारा प्रस्तावित 'विकसित भारत' के विजन पर चर्चा करते हुए कहा कि भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिजिटल तकनीक को अपनाना बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि एक ऐसे परिवेश का निर्माण करना चाहिए जो सही मार्गदर्शन और प्रयासों से सफलता प्राप्त करने और अपने सपनों को साकार करने के लिए प्रेरित करे। राज्यपाल ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.) की महत्ता की चर्चा की और बताया कि भारत सरकार के बजट में ए.आई. आधारित शिक्षा और अनुसंधान के लिए प्रावधान किए गए हैं।

प्रो. रेड्डी बने आयुष विवि के पहले कुलपति

लखनऊ। प्रदेश की राज्यपाल व कुलाधिपति, राज्य विश्वविद्यालय आनंदीबेन पटेल ने महायोगी गुरू गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय के पहले कुलपति के रूप में बीएचयू वाराणसी के आयुर्वेद विभाग के प्रो. कुंदरू रामाचन्द्रा रेड्डी को नियुक्त किया है। प्रो. रेड्डी का कार्यकाल नियुक्ति तिथि से तीन वर्ष का होगा।

HT PAGE 6

LU'S AIH DEPT PLANS TO REDUCE PAPERS TO BALANCE COURSE

LUCKNOW: Two papers namely 'History of tourism in India with special reference to ancient India' and 'temple architecture in culture' are likely to be no longer taught to the students of MA Ancient Indian History and Archaeology at the Lucknow University (LU).

The step is being taken to bridge the gap between MA one year programme for the students who have enrolled for BA four-year programme and the ongoing MA two-year programme.

The ancient Indian history (AIH) department of the university plans to do so from the 2025-26 session. This is being done as even credits have been reduced in the revised syllabus for some papers from four to two. HTC

नए पाठ्यक्रमों की संबद्धता के लिए 22 तक करें आवेदन

जासं ● लखनऊ : लवि ने अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) पा चुके नवीन महाविद्यालयों और पूर्व संचालित महाविद्यालयों में नए पाठ्यक्रमों (बीएड को छोड़ कर) की संबद्धता के आवेदन के लिए गुरुवार को संशोधित समय सारणी जारी कर दी है. यह प्रक्रिया शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए होगी। कुलसचिव विद्यानंद त्रिपाठी ने निर्देश जारी कर कहा है कि सभी प्रस्तावित महाविद्यालय और पहले से संचालित महाविद्यालय henoc.upsdc.gov.in पोर्टल पर आनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

तय तिथि के अनुसार, निरीक्षण मंडल के गठन के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 22 मार्च और निरीक्षण रिपोर्ट प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 30 मार्च निर्धारित है. विश्वविद्यालय द्वारा संबद्धता प्रदान करने की अंतिम तिथि 10 अप्रैल और शासन में अपील करने की अंतिम तिथि 20 अप्रैल है। शासन स्तर पर अपील निस्तारित करने के लिए अंतिम तिथि 10 मई है। संबद्धता प्रक्रिया की अंतिम तिथि 31 मई है। लवि ने अपने संबद्ध महाविद्यालयों को निर्देशित किया है कि ऐसे पाठ्यक्रम, जिनकी संबद्धता आगामी 30 जून को समाप्त हो रही है, वे भी पोर्टल पर आवेदन करें। अन्यथा आगामी सत्र में संबंधित पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्रतिबंधित रहेगा, जिसकी जिम्मेदारी महाविद्यालय की होगी। वहीं, नए पाठ्यक्रम के लिए पूर्व संचालित महाविद्यालयों को 35,400 रुपये और नए महाविद्यालयों को 59,000 रुपये विश्वविद्यालय के फीस पोर्टल पर आनलाइन जमा करना होगा। कुलसचिव विद्यानंद ने सभी संबद्ध महाविद्यालयों से अनुरोध किया है कि वे निर्धारित प्रक्रिया का पालन करें।

आंतरिक मूल्यांकन 16 से

बी.एससी दूसरे और चौथे सेमेस्टर (जंतु विज्ञान) के वोकेशनल कोर्स में दूसरे सेमेस्टर का आंतरिक मूल्यांकन (इंटरनल असिस्मेंट) 16 अप्रैल और चौथे सेमेस्टर का 28 अप्रैल को होगा। एम.एससी दूसरे सेमेस्टर का आंतरिक मूल्यांकन 16 से 30 अप्रैल और चौथे सेमेस्टर का आंतरिक मूल्यांकन 22 से 30 अप्रैल तक होगा। इसके लिए टीमें बना दी गई हैं।

JAGRAN CITY PAGE III

'कक्षा पांच तक मातृ भाषा में मिले बच्चों को शिक्षा'

लखनऊ विश्वविद्यालय में सीईसी-शैक्षिक फिल्म महोत्सव का राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने किया उद्घाटन

जासं ● लखनऊः 'शैक्षणिक फिल्में केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि ज्ञान, जागरूकता और सामाजिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम है। वर्तमान युग में इंटरनेट विद्यार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन बन चुका है, जिससे उनकी शिक्षा अधिक इंटरएक्टिव, सुलभ और प्रभावी बन रही है।' यह विचार राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने गुरुवार को लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में आयोजित 26वें सीईसी-शैक्षिक फिल्म महोत्सव के उद्घाटन के अवसर पर रखे।

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सही मार्गदर्शन और तकनीकी उपकरणों के उपयोग से विद्यार्थियों की समझ और ज्ञान गहरी होती है। राज्यपाल ने कहा कि कक्षा पंच तक के बच्चों को मातृ भाषा में ही पढ़ाई कराना चाहिए। भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिजिटल तकनीक को अपनाना बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि एक ऐसे परिवेश का निर्माण करना चाहिए जो युवाओं को अपने प्रयासों से सफलता पाने और अपने सपनों को साकार करने के लिए प्रेरित करे। 'ज्ञान भारतम मिशन' के माध्यम से एक करोड़ से अधिक पांडुलिपियों को डिजिटल करने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने कहा, केंद्र सरकार के स्वच्छता मिशन को पूरा करने के लिए बच्चों के अंदर कम से कम एक दिन स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए स्कूलों की सफाई की जिम्मेदारी देनी चाहिए।

सीईसी मूक कोर्सों के माध्यम से कर रहा काम : कंसोर्टियम फार एजुकेशनल कम्युनिकेशन (सीईसी) के निदेशक प्रो. जेबी नड्डा ने बताया कि नई शिक्षा नीति के तहत सीईसी मूक कोर्सों के माध्यम से शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए लगातार काम कर रहा है। यह कोर्स भारत सरकार के स्वयम पोर्टल पर मुफ्त उपलब्ध है। इससे पहले लवि के कुलपति प्रो.आलोक कुमार राय ने कहा, खुशी है कि 104 वर्ष पुराने समृद्ध विरासत वाले विश्वविद्यालय में इतना भव्य कार्यक्रम आयोजित करने का अवसर मिला। समारोह में सीईसी के संयुक्त निदेशक डा. सुनील मेहरू, डीन एकेडमिक प्रो. गीतांजलि मिश्रा व अंबेडकर विवि के प्रो.गोपाल सिंह समेत शिक्षक व विद्यार्थी मौजूद थे। यह फिल्म फेस्टिवल 22 मार्च तक चलेगा।

लखनऊ विश्वविद्यालय में आयोजित तीन दिवसीय एजुकेशनल फिल्म फेस्टिवल के शुभारंभ पर राज्यपाल आनंदीबेन पटेल को पुस्तक भेंट करते कुलपति आलोक कुमार राय, साथ में निदेशक सीईसी प्रो.जेबी नड्डा व प्रो. जगदीश मोहन, आंबेडकर विवि के प्रो. गोपाल सिंह व अन्य ● जागरण

लघु फिल्म 'मी एंड माइकल' देख गुदगुदाए दर्शक

जासं, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय में शुरू हुए अंतरराष्ट्रीय एजुकेशनल फिल्म महोत्सव में दर्शकों को अनूठी कथाओं, समृद्ध कहानी कहने की शैली और गहरे सामाजिक प्रभाव वाली फिल्मों की प्रस्तुति देखने को मिली। पहली फिल्म कोलकाता के प्रसिद्ध वेंट्रिलोक्विस्ट प्रबीर कुमार दास के जीवन पर आधारित एक डाक्यूमेंट्री थी। इस लघु फिल्म ने दास और उनके प्रिय कठपुतली साथी माइकल के भावनात्मक और पेशेवर सफर को खूबसूरती से प्रस्तुत किया। सभागार में मौजूद दर्शकों ने फिल्म निर्देशक का तालियों से स्वागत किया। बंगाली भाषा की इस डाक्यूमेंट्री को जगप्रीं मुखर्जी ने निर्देशित किया है।

दूसरी डाक्यूमेंट्री 'इनविजन' ने दर्शकों का पर्यावरणीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया। फिल्म केवल समस्या को उजागर करने तक सीमित नहीं थी, बल्कि एक वृद्धदर्शी व्यक्ति की कहानी भी बताई गई। यह अंग्रेजी भाषा की फिल्म को पनिता कुंडू ने निर्देशित की है। सांस्कृतिक विरासत से जुड़ी फिल्म अबल तबल पाप्स अप आफ्टर 100 ईयर प्रदर्शित की गई।

यह फिल्म बांग्ला की प्रसिद्ध हास्य कविता पुस्तक अबल तबल की 'पहली पाप-अप संस्करण की रचना पर केंद्रित थी। 'इनैप्पु (द कनेक्शन)' फिल्म ने ग्रामीण जीवन की कठिनाइयों को एक संवेदनशील दृष्टिकोण से पेश किया। नेशनल एजुकेशन पालिसी 2020 और डाक्टर और एमआर के बीच आइडियल इंटरव्यूज फिल्म भी प्रदर्शित हुई। आगामी दिनों में फिल्म महोत्सव में और भी प्रभावशाली फिल्म प्रदर्शित किए जाएंगी।

● डाक्यूमेंट्री बनाते समय क्या-क्या चुनौती आई? शूटिंग के समय आपका बेस्ट मूमेंट क्या था ?
-रिचा यादव
-गर्मी के समय में फिल्म को शूट करते समय काफी परेशानी हुई। बाद्दी सब काफी आसान रहा।

डाक्यूमेंट्री को लोगों के बीच प्रदर्शित करना मेरे लिए बेस्ट मूमेंट रहा।
- निर्देशक परनिता कुंडू

● डाक्यूमेंट्री बनाने के लिए फंड कहां से मिला ?
- अतुल अरोड़ा
- जो भी इस डाक्यूमेंट्री को बनाने में शामिल थे, ये सब विद्यार्थी ही हैं। हमारे लिए फंड इकट्ठा करना काफी मुश्किल था। इसलिए हम सभी ने थोड़े थोड़े रुपये लगाकर इसकी शूट किया।
- निर्देशक परनिता कुंडू

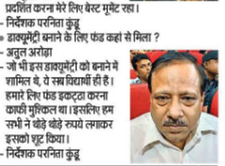

AMRIT VICHAR PAGE 6

पांचवीं तक के छात्रों की पढ़ाई मातृभाषा में हो : राज्यपाल

कार्यक्रम को संबोधित करतीं राज्यपाल आनंदी बेन पटेल। उपस्थित कुलपति डॉ. आलोक कुमार राय व यूजीसी के सीईसी निदेशक प्रो. जेबी नड्डा।

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचारः देश में डिजिटल मीडिया का विकास तेजी से हो रहा है। फिल्में शिक्षा के स्तर को आगे बढाने का बेहतर माध्यम हो सकती हैं। सरकार डिजिटल मीडिया को प्रोत्साहन देने के लिए लगातार काम कर रही है। शिक्षा और विकास के स्तर को बढ़ने के लिए फिल्म एक बेहतरीन माध्यम है। उक्त बातें उत्तर प्रदेश की राज्यपाल और विश्वविद्यालयों की कुलाधिपति आनंदी बेन पटेल ने लखनऊ विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में कहा। उन्होंने मातृभाषा पर चर्चा करते हुए कहा कि 5वीं कक्षा तक के बच्चों को मातृभाषा में ही पढ़ाई कराना चाहिए।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के कंसोर्टियम फॉर एजुकेशनल कम्यूनिकेशन के निदेशक प्रो. जगत भूषण नड्डा ने प्रौद्योगिकी की क्षमता को दोहन करने के बारे में बात की। कार्यक्रम का आरंभ राष्ट्रगान से हुआ, जिसके बाद डीन एकेडमिक

▸▸ लविवि में 26वां सीईसी-शैक्षिक फिल्म महोत्सव का उद्घाटन

प्रो. गीतांजली मिश्रा ने अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर यूजीसी के ज्वाइंट डायरेक्टर, साफ्टवेयर सीईसी डॉ. सुनील मेहरू मौजूद रहे। तीन दिनों तक चलने वाले एजुकेशनल फिल्म महोत्सव में कुल 18 पुरस्कृत फिल्में दिखाई जाएंगी। बांग्ला भाषा पर आधारित माईकल मधुसूदन दत्त की कहानी फिल्म दिखाई गई। इस फिल्म को सत्यजीत रे के सहयोग से बनाया गया है। पर्यावरणीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए जलकुंभी पर एक डॉक्यूमेंट्री प्रस्तुत की गई। इसपर बनी फिल्म उस व्यक्ति की कहानी है, जिसने इस संकट से निपटने के लिए ठोस कदम उठाए। सांस्कृतिक विरासत से जुड़ी फिल्म तबल पॉप्स अप आफ्टर 100 इयर्स प्रदर्शित की गई। पर्यावरण से जुड़े एक अन्य महत्वपूर्ण मुद्दे को उजागर करने वाली डॉक्यूमेंट्री प्लास्टिक प्रदूषण के खतरे पर केंद्रित थी।

THE PION